केरल स्टोरी का सच 7 | समलैंगिक विवाह विवाद 3,9 | घरेलू नुस्खे किचन टिप्स 16

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

ज्येष्ठ कृष्ण 12, वि.2080, युगाब्द 5125, 16 मई, 2023

छत्रपति शिवाजी महाराज राज्यारोहण का 350 वां वर्ष

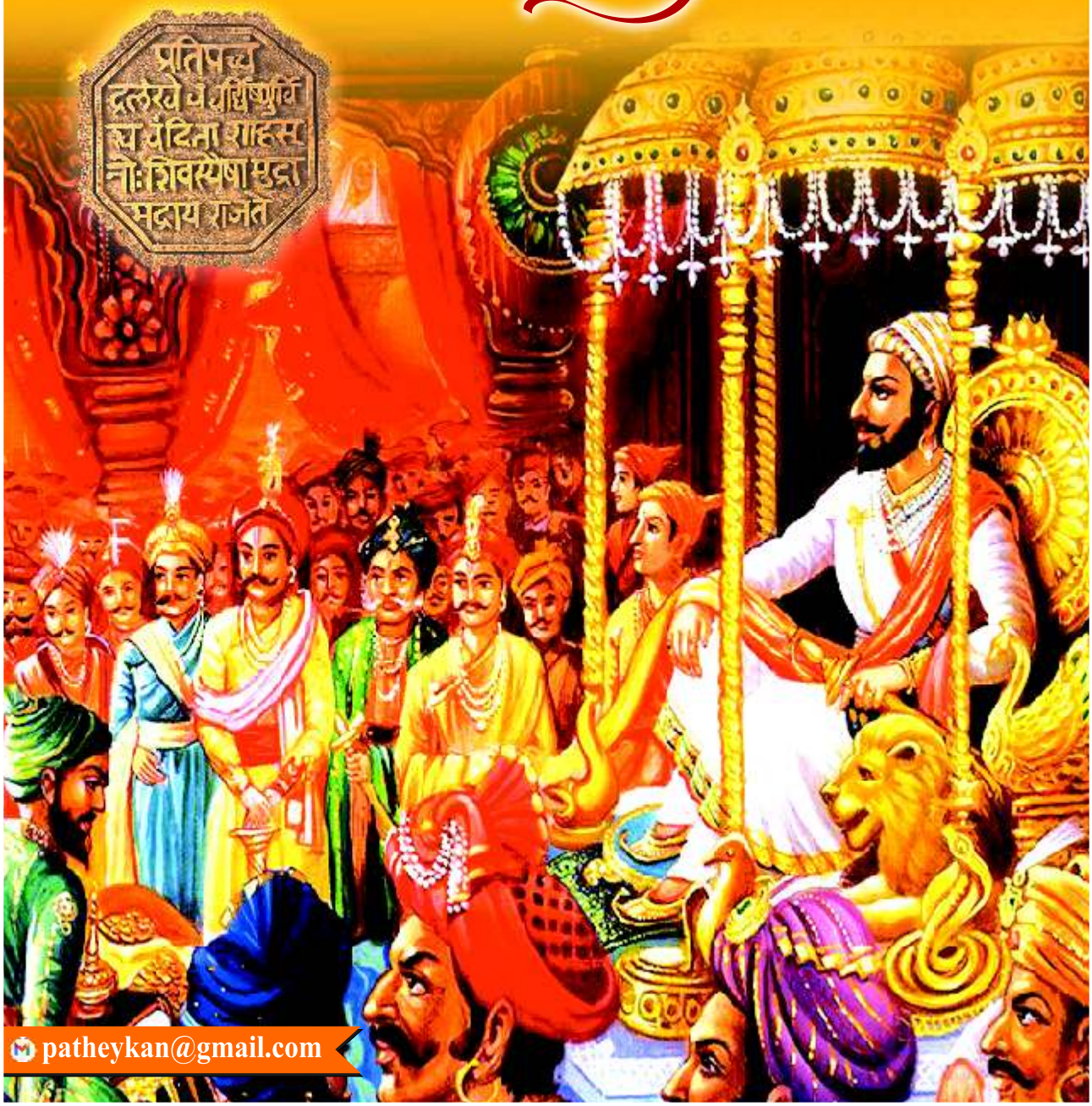

patheykan@gmail.com

गांधी सरनेम लगाने वालों का गांधी परिवार से रिश्ता

महात्मा गांधी के पौत्र अरुण गांधी की 89 साल की उम्र में मृत्यु हो गयी, लेकिन उनकी अंतिम यात्रा में गांधी सरनेम का लाभ लेकर राजनीति करने वाले किसी व्यक्ति का शामिल ना होना अपने आप में विचारणीय प्रश्न है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अरुण गांधी सादा जीवन जीते हुए महिला कल्याण हेतु महाराष्ट्र की एक संस्था से जुड़े रहें व जीवन में अनेक पुस्तकें भी लिखी। उनकी अंतिम यात्रा में किसी भी राजनैतिक दल का कोई भी प्रतिनिधि शामिल नहीं हुआ और ना ही कोई शोक व्यक्त करने वाला सार्वजनिक वक्तव्य जारी किया। मीडिया ने भी उन्हें ज्यादा महत्व नहीं दिया। उनके सरनेम से सम्मान पाने व मलाई खाने वालों का क्या कोई दायित्व नहीं बनता है?

– **प्रेमप्रकाश रजवास,** निवाई, टोंक

गागर में सागर

1 व 16 अप्रैल, 2023 के संयुक्तांक में सरसंघचालक जी द्वारा कहा गया वाक्य 'दूसरों के दु:ख को देखकर मात्र दुखी होना ही पर्याप्त नहीं है, उस दु:ख को दूर करने के लिए दौड़ना भी चाहिए' बहुत ही प्रेरणा देने वाला है। राष्ट्रीय सेवा भारती और पर्यावरण संरक्षण पर दी गई जानकारी बहुत ही ज्ञानप्रद व उपयोगी है। वैसे इस पूरे विशेषांक में ज्ञानप्रद एवं प्रेरणाप्रद सामग्री ने गागर में सागर भर दिया है।

–**हुकमचन्द चौधरी,** सपोटरा, करौली

चिंतनीय

पाथेय कण के अप्रैल संयुक्तांक में 'राष्ट्रीय सेवा संगम' के उद्घाटन के दौरान बालयोगी उमेशनाथ जी महाराज का दिया

गया उद्बोधन पढ़ा, अच्छा लगा। पूज्यश्री ने चिंता जताई कि जिस भारत में कभी घण्टे, घड़ियाल और शंख की नाद के साथ भोर हुआ करती थी, उस देश में आज सुबह की नींद अजान से उड़ती है। वास्तव में ये चिंतनीय विषय है। हम सनातनी ऊँच-नीच और भेदभाव में इतने सिकुड़ गए हैं कि मंदिरों में सुबह-शाम होने वाले शंखनाद कब बंद हो गए पता ही नहीं चला। अगर सनातन संस्कृति को पुनर्प्रतिष्ठित करना है तो हमें सभी भेदभाव भुला कर समरसता स्थापित करनी होगी।

–**बलवंत सिंह खाराबेरा,** चेन्नई

गाय पालें

पाथेय कण 1 व 16 अप्रैल अंक में प्रकाशित आलेख 'दूध के लिए नहीं, गोबर के लिए गाय पालें' अच्छा लगा। मैं भी गो-पालन से जुड़ा हुआ हूं, इस में कुछ अच्छा कर पाऊ इस हेतु पाथेय कण की उक्त सामग्री मेरे लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। भविष्य में भी ऐसी ही लाभकारी जानकारी से अवगत कराने का आपसे अनुरोध है।

– **ललित कुमार जोशी,** उदयपुर

बाबा साहब

1 मई के अंक में डॉ.भीमराव अम्बेडकर जी पर दी गई आमुख कथा अच्छी लगी। बाबा साहब ने समरसता का भाव, अपनापन, सेवाभाव व एकजुटता की प्रेरणा प्रदान की जो एक सामाजिक जीवन एवं भावी पीढ़ी हेतु परस्पर लागू होती है। वो कहते थे कि 'यदि हम एक संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं तो सभी धर्मों के शास्त्रों की संप्रभुता समाप्त होनी चाहिए।

– **लखेरा श्याम,** बावड़ी, जोधपुर

संग्रहणीय अंक

सेवा-स्वावलंबन अंक में दी गई सभी सामग्री पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। लेखों के बीच-बीच में महापुरुषों के प्रेरणादायी कथनों ने मन को छूआ है। सेवा इंटरनेशनल जैसे सेवा भावी संगठन की जानकारी प्रथम बार पढ़ने को मिली।

–**योजक अग्रवाल,** अलवर

सूचना

सुहृदय पाठकगण

नए वर्ष 2023-24 के अप्रैल संयुक्तांक व मई प्रथम का अंक डाक व ट्रांसपोर्ट से भेजा जा चुका है। आपको अंक प्राप्त भी हो गया होगा। आपको अभी तक अंक प्राप्त नहीं हुआ है तो आप अपने डाकघर में सम्पर्क कर जानकारी करें उसके पश्चात् कार्यालय को सूचित करें। विश्वस्त सूत्रों से जानकारी प्राप्त हुई है कि कई डाकघरों में बण्डल यथावत पड़े हुए हैं तथा बंट नहीं रहे हैं इसीलिए आपसे आग्रह किया गया है।

आपका

माणकचन्द
(प्रबंध संपादक)

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **इस्लाम : एक तरफा चलने की जिद क्यों ?**
  https:/patheykan.com/?P=20441
- **बेरोजगारी दूर करने के लिए स्वरोजगार ही समाधान**
  https:/patheykan.com/?P=20397
- **बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का प्रयास**
  https:/patheykan.com/?P=20345

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ कृष्ण 12 से
ज्येष्ठ शुक्ल 11 तक
विक्रम संवत् 2080,
युगाब्द 5125
16-31 मई, 2023
वर्ष : 39
अंक : 03

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया
हेमलता चतुर्वेदी

प्रबंध संपादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर व्हाट्सएप अथवा फोन करें
प्रेषण विभाग
(प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक)
94136 45211
99297 22111
79765 82011

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

मामला समलैंगिक विवाह को मान्यता देने का

इन दिनों देश का सर्वोच्च न्यायालय 'समलैंगिक विवाह' विषय पर प्राथमिकता से सुनवाई कर रहा है। समलैंगिकता यानि पुरुष का पुरुष के साथ और महिला का महिला के साथ यौन संबंध। क्या ऐसे संबंधों को 'विवाह' के दायरे में लाया जा सकता है? दूसरे अर्थों में यदि एक पुरुष एक दूसरे पुरुष से विवाह करना चाहे अथवा एक स्त्री किसी दूसरी स्त्री से विवाह करना चाहे तो क्या कानून में इसकी इजाजत दी जानी चाहिए ?

यहां स्पष्ट कर दें कि भारतीय आपराधिक कानून के अंतर्गत समलैंगिक यौन संबंधों को अपराध मानते हुए दण्ड दिए जाने का प्रावधान था (आईपीसी की धारा 377), परंतु सितम्बर 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के अंतर्गत 'निजता (Privacy)' के अधिकार का विस्तार करते हुए समलैंगिक यौन संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया।

समलैंगिक यौन व्यवहार को अपराध की श्रेणी से निकालने का यह अर्थ तो कतई नहीं है कि उन्हें प्राकृतिक यौन संबंध मान लिया जाए। जो यौन संबंध अप्राकृतिक हैं, उनको न्यायालय द्वारा 'विवाह' की श्रेणी में लाने की व्यग्रता आश्चर्यजनक है।

भारत के इतिहास में समलैंगिकता का उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है। महाभारत काल में, वात्स्यायन के कामसूत्र में, खजुराहो की मूर्तियों आदि में यह दिखाई देती है, परंतु इसे 'विवाह' की परिधि से दूर ही रखा गया। इस सोच की सही अभिव्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्तमान सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले के 2016 में दिए वक्तव्य से प्रकट होती है। तब वे संघ के सह सरकार्यवाह थे। श्री दत्तात्रेय होसबाले ने कहा था '' समलैंगिकता कोई अपराध नहीं है, लेकिन हमारे समाज में यह सामाजिक रूप से अनैतिक काम है। ऐसे लोगों को सजा देने की जरूरत नहीं है, बल्कि इसे मनोवैज्ञानिक मामला मानना चाहिए। गे (समलैंगिक) विवाह असल में समलैंगिकता को संस्थानीकरण देने जैसा है, इसलिए इस पर पाबंदी रहनी चाहिए।''

इस मामले में न केवल केन्द्र सरकार ने शीर्ष न्यायालय में शपथ पत्र (हलफनामा) प्रस्तुत कर सभी याचिकाओं को रद्द करने की मांग की है, वरन् देशभर में महिला संगठनों द्वारा समलैंगिक विवाह की अवधारणा का विरोध करते हुए राष्ट्रपति को ज्ञापन दिए गए हैं। देश के कई पूर्व न्यायाधीश, प्रोफेसर्स, डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, उद्योग से जुड़े लोगों सहित अन्य गणमान्य लोगों ने बड़ी संख्या में हस्ताक्षर कर समलैंगिक विवाह का विरोध किया है। पुरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती ने कहा है कि समलैंगिक विवाह मानव मात्र पर धब्बा है। यदि सर्वोच्च न्यायालय इसे वैधानिक बना देता है तो उस निर्णय को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। केरल कैथोलिक बिशप्स काउंसिल के प्रवक्ता फादर जैकद पालाकपिली कोच्ची के अनुसार दो महिलाओं या दो पुरुषों के बीच विवाह को नहीं माना जा सकता, क्योंकि प्रकृति ही इसकी स्वीकृति नहीं देती है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अनुसार शादी का मूलभूत ढांचा ही एक महिला और एक पुरुष पर आधारित है। जैन, सिख, बौद्ध आदि मजहबों के प्रमुखों ने भी समलैंगिक विवाह की अवधारणा को अप्राकृतिक माना है।

यद्यपि कुछ यूरोपीय देशों ने इसे वैध कर दिया है, परंतु उनकी सोच व संस्कृति भारत से भिन्न है। भारत में विवाह एक पवित्र संस्कार है। जैसे संविधान के मूल तत्वों को नहीं बदला जा सकता, वैसे ही भारतीय संस्कृति के भी कुछ मूल तत्व या सिद्धांत है, इन्हें भी नहीं बदला जाना चाहिए। स्त्री-पुरुष के बीच विवाह तथा विवाह का 'संस्कार' होने की बात भी ऐसी ही बात है।

केन्द्र सरकार का यह कहना ठीक ही है कि विवाह की अवधारणा और मान्यता में सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी पहलू शामिल हैं, इसे न्यायिक व्याख्या के माध्यम से कमजोर नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने केन्द्र सरकार के इस विचार से सहमति जताई है। संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने पिछले दिनों हरियाणा में सम्पन्न प्रतिनिधि सभा की बैठक के अंतिम दिन कहा था,''आप किसी के भी साथ रह सकते हैं, लेकिन हिंदू जीवन शास्त्र में विवाह एक संस्कार है। यह केवल दैहिक सुख का यंत्र नहीं है, न ही यह कॉन्ट्रैक्ट है। विवाह संस्कार का मतलब केवल अपने लिए नहीं, वे एक परिवार की भी शुरुआत करते हैं। इसका उद्देश्य व्यापक समाजहित है। विवाह हमेशा एक पुरुष और महिला के बीच होगा।'' संघ की ओर से दिए गए वक्तव्य काफी संतुलित हैं। इन पर आम सहमति बननी चाहिए। ●

-रामस्वरूप अग्रवाल

स्वराज्य संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज

■ के. छगनलाल बोहरा

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी संवत् 1731 का दिन भारत के इतिहास में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण गौरवशाली दिवस के रूप में अंकित है, जब शताब्दियों बाद भारत भूमि पर गौहन्ता, देव मन्दिरों और देव संस्कृति को नष्ट करने वाले इस्लामिक आक्रांताओं को परास्त कर गौ प्रतिपालक, धर्मरक्षक शिवाजी ने धर्म राज्य हिन्दू पद पादशाही की स्थापना अपने राज्याभिषेक से की। महाकवि भूषण ने शिवाजी के लिए जो लिखा है वह हिन्दू धर्म, संस्कृति की रक्षा में उनके अनुपमेय योगदान का ही द्योतक है –

काशी कर्बला होती, मथुरा मदीना होती।
शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सब की।।

बड़े-बड़े राजवंशों के सूरमा सब प्रकार से समर्थ और शक्तिशाली होते हुए भी ''फलां राज्य पर म्लेच्छों ने आक्रमण किया है, मेरे राज्य पर नहीं, उससे मुझे क्या।'' इस स्वार्थी, अराष्ट्रीय मनोवृत्ति से ग्रस्त एक दूसरे का सहयोग न करके, अनीतिपूर्ण युद्ध के अभ्यस्त म्लेच्छों से हारते और अधीनता स्वीकार कर, अपने ही अन्य बन्धुओं को हराने में सहयोगी होकर सम्पूर्ण भारत भूमि को यवनों की दासता की शृंखला में जकड़ाते चले गये। अपना आत्मगौरव भूले हिन्दू इस हीनताबोध से ग्रस्त हो गये कि मुगल अजेय हैं। अदूरदर्शी उदारता, वृथा अहंकार और सज्जन विकृति के आत्मघाती गुणों ने देश, धर्म और संस्कृति को विनाश के जाल में फंसा दिया।

मां और दादा की प्रेरणा

ऐसे विषम समय में जब देश निराशा के गहन अंधकार में डूबा हुआ था, महाराष्ट्र के शिवनेरी में माता जीजाबाई की कोख से आशा की एक किरण का उदय हुआ। जीजा माता के सद्संस्कार और दादा कोण्डदेव की शिक्षा ने बालक शिवराजे के हिन्दू पद पादशाही संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज बनने का मार्ग प्रशस्त किया। माता जीजाबाई द्वारा बचपन से ही शिवाजी के मन में यह भाव गहराई से भरा गया कि मुझे देश से इस अत्याचारी गौ-ब्राह्मण हन्ता और देव मंदिर नष्ट करने वाले म्लेच्छ शासन को समाप्त कर स्वतंत्र हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करनी है। सनातन काल से यह देश हिन्दू राष्ट्र है और मुझे उसी धर्म राज्य का, रामराज्य का पुनः संस्थापन करना है।

शिवाजी का स्वराज्य अभियान

अपने पिता शाहजी की छोटी सी जागीर पूना के थोड़े से संसाधन और अपने थोड़े से युवा साथियों के बल पर उन्होंने साम, दाम, दण्ड, भेद, जहाँ जिसकी आवश्यकता हुई, वही नीति अपनाते हुए अपने अदम्य साहस और धर्म राज्य की स्थापना के उच्च आदर्श के बल पर हिन्दवी साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुए।

ईस्वी सन् 1647 में सत्रह वर्ष की तरूण अवस्था में तोरणा और राजगढ़ किले पर विजय से प्रारंभ हुआ उनका स्वराज्य अभियान 1674 में उनके राज्याभिषेक तक अबाध गति से चलता रहा।

बीजापुर की अली आदिलशाही के सबसे शक्तिशाली सेनापति अफजल खाँ के वध और उसकी सेना के सर्वनाश, शाइस्ताखाँ के महल में घुसकर उस पर आक्रमण कर उसकी अंगुलियाँ काटना, जयवंत राठौड़ को असफल लौटाना, महाराष्ट्र के पुरन्दर, रायगढ़, रोहिड़ा, जवाली, पन्हाला, प्रतापगढ़ जैसे प्रमुख किले हस्तगत कर सूरत, कल्याण, भिवण्डी जैसे प्रमुख मुगल व्यापारिक केन्द्रों पर हमले कर वहाँ से जुर्माना वसूली करने जैसे अनेक अविश्वसनीय कार्य कर शिवाजी ने अपार प्रसिद्धि हासिल की और हिन्दू राजाओं में फैले इस भ्रम को ध्वस्त कर दिया कि मुस्लिम, तुर्क, मुगलो को परास्त नहीं किया जा सकता।

महाराणा प्रताप से प्रेरणा

माता जीजाबाई से सुने महाराणा प्रताप के एक शताब्दी पूर्व के अकबर के साथ सफल संघर्ष के प्रसंगों से प्रेरणा लेकर, शिवाजी ने अपने से कई गुना अधिक शक्तिशाली इस्लामिक शक्तियों से संघर्ष कर, सफलतापूर्वक एक हिन्दू धर्म राज्य की स्थापना कर, देश में छाई निराशा को हिन्दू गौरव उदय के विश्वास में बदल दिया।

समर्थ-हिंदू वीरों की दास-वृत्ति

शिवाजी की इतिहास दृष्टि बहुत ही व्यावहारिक थी। उन्होंने इतिहास से शिक्षा लेते हुए देखा कि किस प्रकार राजा मानसिंह ने विधर्मी अकबर के लिए अपने ही हिन्दू बन्धु राजाओं का दमन कर, काबुल-कंधार से लेकर बंगाल तक मुगल राज्य का विस्तार किया, कैसे हिन्दू गौरव और स्वतंत्रता की मशाल जलाये रखने वाले

महाराणा प्रताप को अकबर के अधीन करने के लिए उन पर आक्रमण किए।

जब शिवराजे ने अपने पिता शाहजी भौंसले को आदिल शाही की सेवा में अपनी शक्ति का दुरूपयोग करते हुए देखा तो उन्हें यह शूल की तरह चुभता था। क्षत्रिय उदयभान को विधर्मियों के लिए कोण्डाणा की रक्षा करते हुए और कोंकण के मोरे जागीरदारों को आदिलशाही के लिए अपनों से युद्ध करते देख उन्हें हिन्दुओं की इस आत्मगौरव हीनता पर बड़ा दु:ख होता था।

मिर्जा राजा जयसिंह को पत्र

औरंगजेब के लिए मिर्जा राजा जयसिंह को अपने पर चढ़ाई कर आया देख उन्होंने जयसिंह को पत्र लिखा और आह्वान किया कि ''यदि आप एक हिन्दू साम्राज्य की स्थापना का लक्ष्य लेकर आते तो मैं आपके घोड़े की लगाम थाम कर सारा दक्षिण भारत जीत कर आपके चरणों में डाल देता परन्तु आप तो एक म्लेच्छ के लिए अपने ही हिन्दू बांधवों को पराजित करने, हिन्दुओं की ही फौज लेकर आये हैं। यह आपको शोभा नहीं देता। युद्ध में दोनों तरफ से हिन्दुओं का ही रक्त बहेगा, यह उचित नहीं है।'' इस प्रकार उन्होंने जयसिंह की आत्मा को जगाने का प्रयास किया और उस समय युद्ध टाल कर अपनी शक्ति बढ़ाने की नीति अपनाई। जयसिंह के शिवाजी पर आक्रमण के इस अभियान को उचित नहीं मानते हुए उसके ही दरबारी कवि बिहारी ने भी एक दोहे के माध्यम से उसकी आत्मा को जाग्रत करने का प्रयास किया-

''स्वारथु सुकृतु न श्रम वृथा,
देखि विहंग बिचारी।
बाजि पराये पानि परि हूँ
पच्छीनु मति मारी।।''

(अर्थ- हे बाज, तू मन में विचार कर कि तू शिकारी के हाथ में पड़कर अपनी जाति के पक्षियों को मारता है। इसमें न तेरा स्वार्थ है, न यह अच्छा कार्य है, तेरा श्रम भी व्यर्थ जाता है)

छत्रसाल बुन्देला को प्रेरणा

बुन्देलखण्ड के वीर चंपतराय बुन्देला मुगलों के साथ संघर्ष में अपने ही लोगों के असहयोग के कारण अपनी रानी लाल कुंवर सहित वीरगति को प्राप्त हुए। उनका पुत्र छत्रसाल बुन्देला राज्य विहीन होकर मजबूरी में मुगलों की नौकरी करने लगा। औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह को एक बड़ी फौज देकर महाराष्ट्र भेजा। इसमें छत्रसाल को भी साथ जाने का हुकुम हुआ। साथ आने पर भी छत्रसान की आत्मा उसे कचोट रही थी कि अपने पिता के हत्यारों के लिए मैं शिवाजी जैसे महान हिन्दू हितरक्षक के विरूद्ध लड़ने जा रहा हूँ, यह उचित नहीं है। शिकार के बहाने वह लश्कर से अलग होकर शिवाजी के पास चला गया।

छत्रसाल ने जब शिवाजी की सेवा में रहने की इच्छा जताई तो शिवाजी ने उसके क्षत्रियत्व को जगाते हुए कहा कि तुम्हें अपने माता-पिता के हत्यारों से अपना राज्य वापस प्राप्त कर वहाँ धर्मराज्य की स्थापना करनी चाहिए। म्लेच्छ राज्य उखाड़ फेंकने में ही तुम्हारा यश है।

शिवाजी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन से प्रेरित छत्रसाल बुन्देलखण्ड लौट कर मुगलों से अपना राज्य स्वतंत्र कराने का संघर्ष छेड़ देते हैं। साठ वर्षों तक मुगलों से लगातार संघर्ष करते हुए वे एक स्वतंत्र बुन्देल राज्य स्थापित करने में सफल रहते हैं। इस लम्बे संघर्ष में शिवाजी की प्रेरणा सदैव उनको प्रोत्साहित करती रही। 1729 में मुगलों के सुबेदार मुहम्मद बंगश से युद्ध में बुरी तरह से घिर जाने पर छत्रसाल ने बाजीराव प्रथम को सहायता करने का संदेश भेजा। शिवाजी व छत्रसाल की मित्रता को ध्यान में रखते हुए बाजीराव भोजन छोड़कर बुन्देलखण्ड दौड़ पड़े और दो दिन में ही पूना से बुन्देलखण्ड की दूरी पार करते हुए मुहम्मद खान बंगश पर बाज की गति से आक्रमण कर उसकी सेना को नष्ट कर दिया।

समाज को दासता की मानसिकता से मुक्त करने वाले युग पुरुष

अ.भा.प्रतिनिधि सभा द्वारा दिए गए वक्तव्य का अंश

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के उन महान व्यक्तित्वों में एक हैं, जिन्होंने समाज को सैकड़ों वर्षों की दासता की मानसिकता से मुक्त कर समाज में आत्मविश्वास व आत्म गौरव का भाव जगाया। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को उनका राज्याभिषेक हुआ तथा 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना हुई। इस वर्ष हिन्दवी स्वराज का 350वां वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा बाल्यकाल में लिए गए स्वराज्य स्थापना के संकल्प का उद्देश्य मात्र सत्ता प्राप्ति नहीं अपितु, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु 'स्व' आधारित राज्य की स्थापना करना था। अत: उन्होंने उसका अधिष्ठान 'यह राज्य स्थापना श्री की इच्छा है' इस भाव से जोड़ा था। स्वराज्य स्थापना के समय अष्टप्रधान मंडल की रचना, 'राज्यव्यवहार कोष' का निर्माण और स्वभाषा का उपयोग कालगणना हेतु शिव-शक का प्रारम्भ, संस्कृत राजमुद्रा का उपयोग, आदि कार्यकलाप 'धर्म स्थापना' के उद्देश्य से स्थापित 'स्वराज्य' को स्थायित्व देने की दिशा में ही रहे।

फिर से अधिकांश भारत में स्वतंत्रता-सूर्य दमका

इस प्रकार महाराष्ट्र में शिवाजी, बुन्देलखण्ड में छत्रसाल, मेवाड़ में महाराणा राजसिंह और पंजाब में गुरू गोविन्द सिंह तथा उनके शिष्य बन्दा बहादुर वैरागी ने विदेशी मुगलों के आततायी शासन के विरूद्ध हिंदू अस्मिता का जो संघर्ष छेड़ा, उसने मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी। बाजीराव के नेतृत्व में अधिकांश भारत में हिंदू पद पादशाही का शासन, पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह का काबुल और

शिवाजी अद्वितीय-अतुलनीय इतिहास पुरुष

■ दत्तोपंत ठेंगड़ी

संसार के गुण-सम्पन्न अनेकानेक महापुरुषों की शिवाजी से तुलना हो सकती है। सेना-संचालन की दृष्टि से सिकन्दर, सीजर, हानिबाल और नेपोलियन की, दारुण निराशा की घड़ियों में जनता का मनोधैर्य टिकाये रखने की क्षमता की दृष्टि से लिंकन और चर्चिल की, प्रखर राष्ट्रभाव को जाग्रत और संगठित करने में मेजिनी, वाशिंगटन तथा बिस्मार्क की, राष्ट्र निर्माण-कार्य में आत्म-विसर्जन की दृष्टि से कमालपाशा और लेनिन की, आसक्तिरहित शासन करने में मार्कस ऑरेलियस तथा चार्ल्स पंचम की।

किन्तु सम्पूर्ण गुण-समुच्चय की दृष्टि से शिवाजी की तुलना किससे करें? कल्याण के सूबेदार की लावण्यमयी पुत्रवधू को मातृवत् सम्मानित करने वाले छत्रपति के चरित्र की तुलना हम अन्य किस सत्ताधीश से करें?

माओ और चे ग्वेवेरा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध-तंत्र का निर्माण किया। नेपोलियन और हिटलर के मास्को-अभियान के अनुभवों के सैकड़ों वर्ष पहले, युद्ध के दौरान सम्भाव्य आपत्काल में आश्रय-स्थान के नाते सुदूर दक्षिण में उपयुक्त प्रदेश सम्पादित करने की दूरदर्शिता उन्होंने दिखाई। उन्होंने शास्त्र के नाते 'जिओपोलिटिक्स' का विकास होने के 250 वर्ष पूर्व सागरी सत्ता का सूत्रपात प्रयासपूर्वक किया। इतिहास के जिस कालखण्ड में 'सेक्युलर' राज्य की कल्पना पश्चिम में लोकप्रिय नहीं थी, उस समय शिवाजी ने हिन्दू परम्परा के अनुकूल सम्प्रदाय निरपेक्ष धर्मराज्य की स्थापना की और उनका एक विशेष गुण था अपने कर्तृत्व से सम्पादित राज्य के प्रति पूर्ण अनासक्ति! अध्यात्म-प्रवण होने के कारण अर्जित राज्य छोड़कर संत तुकाराम के समक्ष हरि संकीर्तन में ही शेष जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट की। एक अन्य अवसर पर तो उन्होंने अपना सम्पूर्ण राज्य ही समर्थ गुरु रामदास स्वामी के चरणों में समर्पित कर दिया।

6 जून,1674 के दिन सम्पन्न हुआ शिवाजी का राज्यारोहण किसी व्यक्ति का नहीं माना गया। हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना तो घोषणा थी हिन्दू राष्ट्र के सफल प्रत्याक्रमण की, हिन्दू संस्कृति के पुनरूत्थान की और विश्वधर्म की पुन: प्रतिष्ठापना की।

कश्मीर तक फैला शासन, स्वतंत्र बुन्देलखण्ड, मेवाड़ व राजपुताने के स्वतंत्र अन्य शासन स्थापित हुए।

शिवाजी का राज्यारोहण

वर्ष 1674 तक अधिकांश महाराष्ट्र स्वराज्य की सीमा में आ गया। अब इसके एक स्वतंत्र सार्वभौम राज्य होने की अधिकारिक घोषणा की आवश्यकता अनुभव की गई। शिवाजी का राज्याभिषेक समारोह धूमधाम से सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधियों से किए जाने का निश्चय किया गया। मूलत: पैठण और काशी में शिक्षा प्राप्त विद्वान विश्वेश्वर उपाख्य गागा भट्ट ने शास्त्रीय विधियों से उनका राज्याभिषेक समारोह सम्पन्न कराया। सात पवित्र नदियों के जल से अभिषिक्त होकर वे महारानी सोयराबाई और युवराज संभाजी के साथ छत्र धारण किए हुए, पन्तप्रधान (प्रधानमंत्री) मोरोपंत व अष्ट प्रधानों (मंत्रियों) के साथ रत्नजड़ित स्वर्ण सिंहासन पर सुशोभित हुए। विभिन्न स्थानों से आये प्रमुख जागीरदारों, वतनदारों, विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने उन्हें भेंट प्रस्तुत की। गोवा के गवर्नर हेनरी ओक्सीण्डन ने उन्हें हीरे की अंगूठी भेंट की। स्वर्ण, रजत के तुलादान सहित ब्राह्मणों, याचकों को विपुल द्रव्य वस्त्रादि दान दिये गये। इस प्रकार सम्पूर्णत: हिंदू शास्त्रोक्त विधि के अनुसार शिवाजी का सार्वभौम राजा के रूप में अभिषेक हुआ। जीजामाता का चिरप्रतीक्षित हिन्दवी साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न पूरा हुआ।

राज्याभिषेक के व्यापक प्रभाव

विजय नगर साम्राज्य के पतन के करीब दो सौ वर्षों बाद भारत में पुन: एक बार हिंदू साम्राज्य की स्थापना से धर्म संस्कृति को महान सम्बल प्राप्त हुआ। भयभीत, पददलित हिंदू जनता के हृदय में साहस का संचार हुआ। शिवाजी के राज्याभिषेक से सुप्त हिन्दू शौर्य का ऐसा व्यापक जागरण हुआ कि दिल्ली का मुगल ताज कुछ ही वर्षों में उसके सामने नतमस्तक हो गया।

क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत

अंग्रेजों को भारत से उखाड़ फेंकने में क्रांतिकारियों के लिए शिवाजी का जीवन वृत्त और राज्याभिषेक एक श्रेष्ठ प्रेरणा स्त्रोत की तरह प्रयुक्त हुआ। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने जन जागरण के लिए शिवाजी उत्सव का प्रारंभ 1895 में किया, जिससे देश भर में देशभक्ति का ज्वार उठा। 1908 में ढाका की ''अनुशीलन समिति'' के कार्यालय पर पुलिस ने छापा मारा तो वहाँ पर शिवाजी और उनके राज्याभिषेक पर विपुल साहित्य पकड़ा गया।

शिवाजी प्रशंसक रवीन्द्र नाथ टैगोर

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाल में जन-जागरण के लिए शिवाजी पर कई कविताएँ लिखी। उनकी ''प्रतिनिधि'' शीर्षक वाली कविता में वे बंगाल के अंग्रेज भक्त जागीरदारों को शिवाजी के माध्यम से कड़ी फटकार लगाते हैं जिसमें राज्याभिषेक के बाद समर्थ रामदास शिवाजी से कहते है कि ''यह हिन्दू पद पादशाही भगवान शिव का राज्य है तुम शिव के ''प्रतिनिधि'' के रूप में सज्जनों का प्रतिपालन और दुष्टों, विधर्मियों, आक्रांताओं का

हिन्दू राष्ट्र पुनरुत्थान के नायक

■ श्री गुरुजी

''जब परकीय लोगों ने इस पवित्र देश में अपने राज्य प्रस्थापित करते हुए इस भूमि के पुत्रों को दासता का जीवन बिताने के लिए बाध्य किया, तब से निरन्तर पराभव के बीच यदा-कदा हमारा पौरुष प्रकट हुआ, पराक्रम की झलक दिखाई दी, कभी कुछ सफलता भी प्राप्त हुई, परंतु उस सफलता को स्थायी रूप देकर जनसाधारण में उसके द्वारा आत्मविश्वास के निर्माण का कार्य नहीं हुआ। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी अपने इतिहास का अत्यंत पवित्र दिवस है। इसी तिथि पर निकटतम भूतकाल में हिंदू-राष्ट्र के पुनरुत्थान का परिचायक एक भव्य प्रयास संपन्न हुआ था। मैं समझता हूँ कि इन तीन सौ वर्षों में उस पर्व की स्मृति को दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक उज्जवल बनाते रहने का श्रेय इसी दिवस को है। अत: इस दिन के महत्व का भली-भांति विचार करना हमारे लिए बड़ा लाभदायक होगा।'' (संघ के द्वितीय सरसंघचालक)

निर्दलन करो। मेवाड़ के हिन्दू राज्य में भी राज्य भगवान एकलिंगनाथ का और महाराणा उनके दीवान के रूप में राज्य संभालते हैं। इसी आदर्श को संभवत: शिवाजी ने स्वीकार किया हो।

1897 में जब ''शिवाजी उत्सव'' बंगाल में भी प्रारंभ हुए तो टैगोर लिखते हैं कि ''जब शिवाजी ने महाराष्ट्र से स्वतंत्रता का आह्वान किया था तब बंगाल ने उसका प्रत्युत्तर नहीं दिया। लेकिन अब शिवाजी से प्रेरणा लेकर बंगाल को स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अग्रणी भूमिका निभानी है।''

इस प्रकार शिवाजी के राज्याभिषेक ने समय-समय पर भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में एक मशाल का काम किया। शिवाजी का स्वराज्य संस्थापन और हिन्दू पद पादशाही ही भारत के विश्व गुरु पद संस्थापन का आदर्श प्रतिमान और प्रेरणा स्रोत हो सकता है।

-क्षेत्रीय संगठन सचिव, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

आतंकवाद और धर्मान्तरण का विषय गम्भीरता से उठाती 'द केरल स्टोरी'

■ हेमलता चतुर्वेदी

शालिनी उन्नीकृष्णन पलक झपकते ही फातिमा नहीं बन गई। पहले सिर पर गजरे की जगह हिजाब आया। फिर मन-मंदिर में भगवान की जगह अल्लाह को बिठाया गया। प्यार जैसे पवित्र भाव को हथियार बना कर लड़कियों को परिवार से विमुख किया गया। शादी के लिए धर्म परिवर्तन की मजबूरी समझा कर मुस्लिम धर्म कबूल करवाया गया। ऐसी कितनी ही फातिमाएं धर्म परिवर्तन की राह पर निकल पड़ीं और बन गई आईएसआईएस जैसे आतंकी संगठनों की कठपुतली। इसलिए यह फिल्म केवल धर्म परिवर्तन ही नहीं,बल्कि आतंकवाद जैसे अंतरराष्ट्रीय मुद्दे को भी चर्चा में लाती है। फिल्म पर अंतरराष्ट्रीय समीक्षकों का ध्यान जाएगा या नहीं, यह तो आने वाला समय बताएगा लेकिन आतंकवाद निश्चित रूप से सालों से चली आ रही अंतरराष्ट्रीय समस्या है। केरल में आतंकवाद का यह सबसे खतरनाक रूप है जो दबे पांव आकर समाज को खोखला कर रहा है। विषय गंभीर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे बिना-बंदूक व गोली की आवाज के खामोश आतंकवाद की संज्ञा दी है। फिल्म का प्रभाव क्षेत्र समझे बिना पार्टी विशेष शासित राज्यों ने इस पर बैन लगा दिया तो कई राज्यों ने इसे कर मुक्त कर दिया। स्पष्ट है वोट बैंक साधने वाले राजनेता या नेत्री

राष्ट्र तो दूर मानवता तक पर विचार करने वाले नहीं दिख रहे।

फिल्म की रीलीज से पहले इसका ट्रेलर सामने आते ही देश भर में इस पर विवाद छिड़ गया था। निर्देशक सुदीप्तो सेन

दो पूर्व मुख्यमंत्री जता चुके हैं चिंता

इस बीच केरल के पूर्व मुख्यमंत्री वीएस अच्युतानंद का वह साक्षात्कार सुर्खियों में है, जिसमें उन्होंने कहा था कि केरल अगले बीस सालों में इस्लामिक स्टेट बन जाएगा।

एक और पूर्व मुख्यमंत्री ओमान चांडी 2010 में पेश की गई रिपोर्ट में कह चुके हैं कि केरल में हर साल करीब 2800 से 3200 लड़कियां इस्लाम अपना लेती हैं।

इस्लामिक षड्यंत्र

- जे. नन्दकुमार

''हिंदू और ईसाई लड़कियों को 'प्रेम' जाल में फंसाकर इस्लामी देशों में ले जाना एक षड्यंत्र है। इसके प्रमाण भी उपलब्ध हैं। अनेक लोगों ने बताया है कि हिंदू लड़कियों को इस्लामी देशों में ले जाया गया है। केरल के डीजीपी रहे लोकनाथ बेहरा ने बयान दिया था कि 'केरल में इस्लामीकरण का षड्यंत्र तेजी से चल रहा है। ये सामान्य लोग नहीं हैं, ये इस विषय के बारे में बहुत पहले से बताते आ रहे हैं।' 'लव जिहाद' शब्द का प्रयोग सबसे पहले केरल में न्यायाधीश रहे न्यायमूर्ति केटी शंकरन ने प्रमाण सहित किया था। उन्होंने कहा था, यहां पर सरकार से लेकर पुलिस प्रशासन तक को इस विषय को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। यहां तक कि केरल के ईसाई बिशप जैसे लोगों का भी कहना है कि इस्लामी षड्यंत्र से लड़कियों को सजग रहने की आवश्यकता है। यह बात बिशप ने चर्च में रविवार की प्रार्थना सभा में बोली थी। आज केरल एक ज्वालामुखी के ऊपर बैठा है, यह स्थिति विस्फोटक है।''

-अ.भा.संयोजक, प्रज्ञा प्रवाह

आईएसआईएस में भर्ती का सच हुआ उजागर

2019 में आई एक रिपोर्ट 'ऑब्जर्वर रीसर्च फाउंडेशन' ने बताया कि 2014 से 2018 के बीच केरल से करीब 60-70 लोग आतंकी संगठन आईएसआईएस में शामिल हुए। सरकारी आधिकारिक आंकड़े इससे कहीं अधिक हैं। आतंकवाद पर अमरीकी विदेश विभाग की 2020 में आई एक रिपोर्ट के अनुसार, 2014 से 2018 के बीच भारत से कुल 66 लोग आईएसआईएस में भर्ती हुए। एक और दावा किया जा रहा है कि केरल से 32 हजार लड़कियों ने न केवल इस्लाम धर्म अपनाया बल्कि वे लापता हैं और कथित तौर पर आईएसआईएस में काम कर रही हैं। फिल्म में एक संवाद ऐसा भी है जो यह बताता है कि आईएसआईएस लड़कियों को आत्मघाती हमलावर के तौर पर काम में लेता है, लड़ाका नहीं बनाता।

मेरे अंदर जिहादी सोच पैदा की गई- श्रुति

केरल के कासरगोड ब्राह्मण परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी श्रुति के मन में इस्लामी कॉलेज में पढ़ाई के दौरान हिंदू धर्म के प्रति ऐसी नफरत भरी गई कि उसे पता नहीं चला कि वह कब इस्लाम के रास्ते पर चल पड़ी। उसने कन्वर्जन कराकर इस्लाम कबूल कर लिया। आखिरकार, माता-पिता, विहिप कार्यकर्ताओं और आर्ष विद्या समाजम के सद्प्रयासों से श्रुति स्वधर्म में लौटीं।

गुस्सा का दावा है कि केरल में हजारों लड़कियों को इस्लाम 'कबूल' करवा कर आईएसआईएस में भर्ती करवाया जा रहा है।

यह दावा ही नहीं सच्चाई है। ऐसे बहुत से सच्चे किरदार फिल्म रीलीज के बाद सामने आ चुके हैं, जिनकी कहानी हूबहू फिल्म की कहानी से मिलती जुलती है। 2019 की एक खबर के अनुसार, निमिषा सम्पत नाम की एक महिला दंत चिकित्सक केरल से अपने पति के साथ लापता हो गई। बताया जाता है कि केरल के दक्षिणी-पश्चिमी प्रांत से दंत चिकित्सा की पढ़ाई करने वाली निमिषा सम्पत वहीं पर अपने भावी पति से मिलीं जो ईसाई था। दोनों धर्म परिवर्तन कर इस्लामी बन गए। माना जा रहा है कि वे अफगानिस्तान में हैं और भारतीय अधिकारियों को उनकी तलाश है। निमिषा धर्म बदलने के बाद फातिमा बन चुकी हैं। गौरतलब है कि 'द केरल स्टोरी' की मुख्य पात्र का नाम भी फिल्म में धर्म परिवर्तन के बाद फातिमा ही है। कला समाज को आईना दिखाने का काम करती है। फिल्म निर्माण भी ऐसी ही कला है। ट्रेलर रीलीज होते ही केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने इस फिल्म को संघ परिवार का एजेंडा बता दिया। धर्म परिवर्तन जैसे विषय पहले भी उठे हैं और उठते रहेंगे, केवल भारत ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी। फिल्म में जो दिखाया गया है वह सच्ची कहानियों से प्रेरित है। आप अपने आस-पास के लोगों से चर्चा कीजिए, कट्टरपंथियों के धर्म परिवर्तन के प्रयास स्वत: सामने आ जाएंगे।

जहां तक फिल्म के शीर्षक में केरल का नाम होने को राजनीति से जोड़ा जा रहा है, इस संबंध में कहा जा सकता है कि जहां आतंकियों ने अपना उद्देश्य स्थल चुना है, बात उसी की की जाएगी। इस संबंध में कई प्रमाण उपलब्ध हैं। ऐसा नहीं है कि निर्माता-निर्देशक किसी एक राज्य की राजनीति को प्रभावित करना चाहते हैं। इससे पहले भी बॉलीवुड 'कश्मीर फाइल्स' नामक फिल्म दे चुका है। उसमें कश्मीर के मुद्दे को उठाया गया था। भले ही यह सच है कि केरल में आजादी के बाद से अब तक माकपा या कांग्रेस की ही सरकारें रही हैं लेकिन हर विषय को राजनीतिक चश्मे से देखना ठीक नहीं।

आईएसआईएस की भारत पर है नजर

आईएसआईएस की एक अरसे से भारत पर नजर है। वह भारत के दक्षिणी हिस्से में तथाकथित खुरासान खलीफा नाम से काम कर रहा है। यह आतंकी संगठन 2019 में गुप्तचर एजेंसियों के रडार पर आया था। सीरिया से आई रिपोर्टों में भी आईएसआईएस में भारतीय लड़ाकाओं के होने की पुष्टि हो चुकी है। इनमें से कुछ को तब गिरफ्तार कर लिया गया जब वे भारत पर आतंकी हमला करने की साजिश कर रहे थे।

डेली पायनियर की एक रिपोर्ट के अनुसार दिसम्बर 2022 में आईएसआईएस ने भारत से 21 कट्टरपंथी युवाओं को भर्ती किया था। इस साल जनवरी में यह संख्या बढ़ कर 28 हो गई। फरवरी में 37 युवा आईएसआईएस में शामिल हुए तो मार्च में 36 युवा। अप्रैल में यह संख्या बढ़ कर 68 हो गई। भर्ती होने वाले युवा कर्नाटक व राजस्थान से भी बताए जा रहे हैं। फिल्म केरल स्टोरी में उठाए गए मुद्दों पर गंभीरताा से संज्ञान लेते हुए कार्रवाई होनी चाहिए। समाज को भी अपनी बेटियां बचाने के लिए आगे आना होगा।

निमिषा का मां को संदेश

भारत छोड़ने के कई साल बाद निमिषा से फातिमा बनी दंत चिकित्सक निमिषा सम्पत ने अफगानिस्तान से अपनी मां को वॉइस मैसेज भेजे। फिल्म में कटाक्ष किया गया है कि कैसे फातिमा अपनी मां से बात करने के लिए फोन मांगती रहती है और आतंकी संगठनों के लोग मोबाइल फोन इस्तेमाल करना इस्लाम में महिलाओं के लिए हराम बता कर उसे फोन नहीं करने देते। बड़ी मुश्किल से वह किसी अन्य महिला से मदद लेती है जो इस शर्त पर फातिमा को मोबाइल देती है कि वह केवल वॉइस मैसेज भेज सकती है। अफगानिस्तान में बच्ची को जन्म देने के बाद मां से बात करने की फातिमा की उत्कंठा और फोन न मिलना बहुत बारीकी से दिखाया गया सच है। इसकी बानगी सच्ची घटना की महिला दंत चिकित्सक निमिषा की मां बिन्दु सम्पत के शब्दों में झलकती है। वे कहती हैं कि वह अपनी बेटी की आवाज सुनने को आतुर थी। वह अपनी बेटी से कोई सवाल नहीं पूछ सकी।

समलैंगिक विवाह को लेकर सुप्रीम कोर्ट की 'हठ' धर्मिता ?

■ मेघराज खत्री

भारतीय संस्कृति में सम्यक मानव जीवन के आश्रमों की व्यवस्था हैं। ब्रह्मचर्याश्रम में शिक्षा, संस्कार तथा कौशल प्राप्त करने के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश का प्रावधान है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश से तात्पर्य है कि पुरुष तथा स्त्री अनुष्ठानपूर्वक विवाह करते हैं। विवाह को सोलह संस्कारों में महत्वपूर्ण संस्कार (पाणिग्रहण संस्कार) बताया गया है, जिसके द्वारा मनुष्य धर्मपूर्वक आचरण करता है तथा परिवार-कुल परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए संतानोत्पति करता है। इसीलिए पत्नी को अर्द्धांगिनी, धर्म पत्नी, धर्म-सहचारिणी भी कहा जाता है। विवाह संस्कार के मंत्रों में पति-पत्नी के जन्म-जन्मांतर तक साथ रहने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की जाती है। स्पष्ट है कि विवाह संस्कार केवल दैहिक सुख के लिए नहीं है।

संस्कृति पर कुठाराघात

भारत की स्वाधीनता के बाद जो सरकारें शासन में आई, लगता है उनका भारतीय संस्कृति, परम्पराओं तथा मानवीय जीवन-मूल्यों से कोई सरोकार नहीं रहा। वे केवल अंग्रेजों द्वारा थोपी गई शिक्षा पद्धति को चलाती रहीं। शनैः शनैः हम भारतीयजन भी पाश्चात्य जीवन प्रणाली अपनाने लगे जिसमें व्यक्ति तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रमुखता दी जाती है, अधिकारों की बात की जाती है। इस भाव-भावना को बल देने का काम शासक वर्ग के चहेते वामपंथी चिंतक, लेखक, शिक्षा शास्त्रियों ने किया। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा के नाम पर अनेकानेक स्वयंसेवी संगठन (NGOs) बन गए जिन्हें हिन्दू (भारतीय) संस्कृति-परंपराओं को नष्ट करने के लिए देश-विदेश से आर्थिक धन उपलब्ध कराया जाता रहा। इन लोगों ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए अखबार-पत्रिका में अग्रलेख का सहारा लिया। अपने नकारात्मक आंदोलन को प्रोत्साहित करने के लिए पूरे इको सिस्टम का निर्माण किया जिसमें अभिनेता, लेखक, पत्रकार, वकील ही नहीं, उच्च न्यायपालिका में भी घुसपैठ करने में सफल हुए। आज के तकनीकी-संचार साधनों का उपयोग कर सोशल मीडिया पर झूठे/द्वेषपूर्ण नकारात्मक विमर्श गढ़ने, उसे प्रसारित करने व समर्थन देने का पूरा ढाँचा भारत में सक्रिय है।

व्यक्ति नहीं परिवार

भारतीय जीवन पद्धति में मानव जीवन की पारिवारिक व्यवस्था में सभी परिवारजन अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, जिससे सभी के अधिकार स्वतः ही सुरक्षित हो जाते हैं। सभी परिवारजन एक दूसरे के काम में हाथ बंटाने के साथ ही उतार-चढ़ाव के समय आपसी सहयोग करते हुए परिवार इकाई को सुरक्षा तथा दृढ़ आधार देते हैं। लेकिन इस नए ईको-सिस्टम ने पुरानी तथा समय की कसौटी पर खरी उतरी व्यवस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए मानव जीवन में द्वेषपूर्ण वर्ग संघर्ष को स्थापित किया, पारिवारिक जीवन को विखंडित करने के लिए महिलाओं को पुरुषों के विरुद्ध लामबंद किया। जन-हित याचिकाओं के माध्यम से सीधे न्यायपालिका से हस्तक्षेप करवाने लगे।

जनभावनाओं के प्रति असंवेदनशीलता

उच्च तथा उच्चतम न्यायालय सामान्य नागरिक से संबंधित लाखों मामलों के लंबित होने के बाद भी विभिन्न नामों से अधिकारों के नाम पर जनहित याचिकाओं पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करने लगे तथा ऐसे मामलों की सुनवाई को न केवल प्राथमिकता बल्कि याचियों के प्रति अत्यधिक संवेदना प्रकट कर हर हाल में उनके पक्ष में निर्णय देने के लिए उत्सुक दिखे, भले ही याचिका से केवल 145 करोड़ की जनसंख्या के चौथाई से आधे प्रतिशत लोग ही प्रभावित हों।

समलैंगिक विवाह मामला

ऐसा ही एक मामला वर्तमान में भारत के उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ के समक्ष चल रहा है, जिसमें समलैंगिक विवाह को वैधानिक मान्यता दिलाने के लिए कुछ जनहित याचिकाएं प्रस्तुत की गई हैं। हालांकि केन्द्र सरकार ने अपना पक्ष रखते हुए निम्न आधारों पर याचिकाओं को निरस्त करने की प्रार्थना की है:-

■ समलैंगिकता एक पाश्चात्य जगत तथा शहरी अभिजात्य वर्ग की सोच है जो भारतीय परिवार अवधारणा के विरूद्ध है।

■ समलैंगिक शादी को कानूनी मान्यता दिए जाने पर सामाजिक संतुलन बिगड़ जाएगा।

■ गोद लेने, तलाक, भरण-पोषण, विरासत आदि से संबंधित मुद्दों में बहुत जटिलताएं पैदा होंगी।

■ जैसे संविधान के मूल स्वरूप को नहीं बदला जा सकता वैसे ही शादी के मूलभूत विचार (जैविक स्त्री-पुरुष के बीच विवाह) को भी बदला नहीं जा सकता।

■ नए सामाजिक संबंधों पर निर्णय करने (कानून बनाने) का अधिकार केवल संसद को हैं।

केन्द्र सरकार ने इस मामले में राज्य सरकारों से उनका पक्ष जानने का भी न्यायपालिका से अनुरोध किया। हिंदू ही नहीं, अन्य मत-पंथों (मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन) के सामाजिक संगठनों तथा प्रमुखों ने भी इन संबंधों को धर्म, शास्त्रीय मान्यताओं-परंपराओं तथा प्रकृति के नियमों के विपरीत बताते हुए विरोध किया है। सरकार का पक्ष रखते हुए सालिसिटर जनरल ने यहां तक कहा कि यदि ऐसे जोड़ों को मान्यता देने की दलील स्वीकार कर ली जाती है, तो दो सगे लोगों में बने यौन संबंधों के बारे में कोई भी अदालत में आकर कहेगा कि एक प्रतिबंधित सीमा में दो वयस्कों (सगे भाई-बहिन तक) के बीच बने यौन संबंधों में सरकार को दखल देने का अधिकार नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि समलैंगिक विवाह को मान्यता देनी होगी तो संविधान के 158 प्रावधानों, भारतीय दण्ड संहिता और 28 अन्य कानूनों में बदलाव करना होगा। विभिन्न कानूनों में प्रयुक्त माता, पिता, पति, पत्नी, विधवा, विधुर इत्यादि शब्दों को परिभाषित करना मुश्किल होगा।

सारे विरोधों को दरकिनार कर मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने अपना मंतव्य शुरूआत में ही स्पष्ट करते हुए कहा कि पांच वर्ष पूर्व 2018 में समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर करने के बाद कोई यह सोच सकता है कि समलैंगिक लोग विवाह जैसे संबंधों में हो सकते हैं। उनको भी वे सभी अधिकार होने चाहिए जो अन्य नागरिकों को हैं।

याची वकील सौरभ कृपाल

यहां यह उल्लेख करना भी समयोचित होगा कि 2018 के समलैंगिक यौन-संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करवाने वाले मामले तथा वर्तमान समलैंगिक विवाह को मान्यता दिलाने के लिए जो वकीलों की फौज लगी उसमें एक नाम सौरभ कृपाल भी है जो दोनों मामलों में याचियों के वकील हैं। 11 नवम्बर, 2021 को सुप्रीम कोर्ट के कालेजियम ने श्री कृपाल को दिल्ली उच्च न्यायालय में नियुक्ति की सिफारिश की थी। केन्द्र सरकार को गुप्तचर विभाग से प्राप्त रिपोर्ट में श्री कृपाल के विरूद्ध टिप्पणियाँ थीं। अत: सरकार ने इस नियुक्ति को स्वीकृति नहीं दी। माननीय न्यायाधीशों ने गुप्तचर विभाग के अधिकारियों तथा राष्ट्र की सुरक्षा को दांव पर लगाते हुए न केवल उस गुप्त रिपोर्ट को लीक किया, बल्कि अपनी हठधर्मिता दिखाते हुए श्री कृपाल की नियुक्ति की पुन: अनुशंषा कर दी।

पाठकों की जानकारी के लिए यह बताना आवश्यक है कि श्री कृपाल स्वयं समलैंगिक हैं तथा उन्हें अपने समलैंगिक होने पर गर्व है। श्री कृपाल ने स्वीकार किया है कि एक विदेशी पुरुष से उनके यौन संबंध हैं। उस विदेशी व्यक्ति पर जासूसी संगठन से जुड़े होने के आरोप भी हैं।

लोगों के मन में इस प्रकार की आशंकाएं भी उत्पन्न हो रही हैं कि कहीं सौरभ कृपाल को उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनाने में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए ही तो सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समलैंगिक विवाह को मान्य करने की उत्सुकता नहीं दिखाई जा रही है?

पूर्व न्यायाधीशों, राजदूतों एवं नौकरशाहों ने किया विरोध

उच्च न्यायालय के 121 सेवा निवृत्त न्यायाधीशों एवं छ: पूर्व राजदूतों सहित 101 पूर्व नौकरशाहों ने राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू को पत्र लिखकर कहा है कि समलैंगिक विवाहों को वैधानिकता देने का प्रयास अत्यधिक आपत्तिजनक है।

उन्होंने कहा कि भारतीय समाज एवं संस्कृति समलैंगिक व्यवहार संस्था को स्वीकार नहीं करती क्योंकि यह अतार्किक एवं अप्राकृतिक है।

हस्ताक्षरकर्ताओं ने कहा कि देश की मूल सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक विश्वासों के विरुद्ध निरंतर हमला किए जाने से वे आश्चर्यचकित हैं। उन्होंने कहा कि न्यायालयों को विवाह संस्था को ध्वस्त करने से अपने को रोकना चाहिए।

बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने 23 अप्रैल को एक वक्तव्य जारी कर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समलैंगिक विवाह पर सुनवाई का विरोध किया है।

क्या कहते हैं वरिष्ठजन ?

राज.उच्च न्यायालय जयपुर स्थित सभागार में राज.हाईकोर्ट बार एसोसिएशन द्वारा 5 मई को आयोजित सभा में प्रकट किए गए उद्गार-

न्यायमूर्ति आरएस राठौड़

से.नि.न्यायाधीश, राज.उच्च न्यायालय

हमारे गांव-कस्बों में समलैंगिक विवाह जैसी बातें करना भी शर्म का विषय माना जाता है। इस प्रकार की बातें करना हमारी मर्यादा के विरुद्ध माना जाता है। कानून बनाना न्यायपालिका का कार्य नहीं है। यह विधायिका का कार्य है।

एन ए नकवी

पूर्व चेयरमैन, राज.बार काउंसिल

समलैंगिक विवाह कानून का कंसेप्ट इस संपूर्ण सृष्टि में किसी भी प्रकार से स्वीकार्य नहीं है। उच्चतम न्यायालय को अपना महत्वपूर्ण समय इन अनावश्यक मुद्दों पर खर्च नहीं करना चाहिए।

जसवीर सिंह

पूर्व अध्यक्ष, राज.अल्पसंख्यक आयोग, जयपुर

हिंदू, मुस्लिम, क्रिश्चियन अथवा सिख किसी भी सभ्यता में समलैंगिक विवाह का कोई स्थान नहीं है। यह प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है।

क्या कहते हैं वरिष्ठजन ?

पत्रकार जितेश जेठानंदानी द्वारा राजस्थान के कतिपय प्रमुख लोगों से समलैंगिक विवाह की मान्यता के संबंध में चर्चा की गई। इस चर्चा के दौरान उनके अभिकथन के कुछ अंश आगे दिए जा रहे हैं-

ताराचंद मीणा

केरल के पूर्व अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं मुख्य चुनाव अधिकारी

भारत में समलैंगिक शादियां अनसुनी हैं। निश्चित रूप से ये सदियों पुरानी भारतीय संस्कृति और इसके सामाजिक लोकाचार के विपरीत हैं। इन्हें कानूनी मान्यता और समर्थन प्राप्त हो जाने पर स्थिति और अधिक चिंताजनक हो जाएगी। अगर ऐसे संबंध वैवाहिक रिश्ते तक पहुँचे तो यह प्रकृति के नियम के खिलाफ भी हो जाता है। इससे समाज में यौन अराजकता हो सकती है।

मुझे आशा है कि कैबिनेट सचिव के नेतृत्व में गठित समिति इस विषय के तमाम पहलुओं और संबंधित विषयों का अवलोकन करेगी।

केसी मीणा

पूर्व अतिरिक्त निदेशक, गुप्तचर ब्यूरो (आईबी)

एलजीबीटी देश में वर्तमान में चर्चा का विषय बना हुआ है। कुछ लोग तर्क दे रहे हैं कि एलजीबीटी समुदाय के लोगों को कानूनी अधिकार दिया जाना चाहिए। मैं इस तरह के विचार के सख्त विरोध में हूं। इस तरह का विचार तथा इस तरह के समुदाय को मान्यता प्रदान करना अथवा कानूनी अधिकार देना भारत की सभ्यता एवं संस्कृति के विरुद्ध है। विवाह से तात्पर्य है पुरुष और महिला के बीच में विवाह। हिंदू मैरिज एक्ट में भी यह प्रावधान है।

डॉ.राघवाचार्य जी महाराज

पीठाधीश्वर, रेवासा धाम

भारत की पावन धर्मप्राण वसुंधरा में जिनको भी जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उन्हें मनुष्य से देवत्व की और चिंतन करना चाहिए, ना कि मनुष्य होकर के पशुता की ओर जाकर पतन करना चाहिए। यह दुर्भाग्य है कि हमारे देश में पाश्चात्य देशों के देखादेखी समलैंगिक विवाहों पर सर्वोच्च न्यायालय में चर्चा हो रही है। फैसले से इस देश में पशुओं जैसी स्वछन्दता का दृश्य परिलक्षित होगा।

संस्कृति व संस्कारों के कारण ही यह देश विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है, समलैंगिक विवाह उसे ध्वस्त कर देंगे।

मेरा समाज से निवेदन है इसका खुलकर विरोध करना चाहिए तथा संयम और संस्कारों के प्रति देश को मजबूत होना चाहिए। तभी हम मानव सभ्यता को बचा पाएंगे

घनश्याम तिवाड़ी

सांसद राज्यसभा

हमारे यहां विवाह कॉन्ट्रैक्ट नहीं है, कोई समझौता नहीं है, एक संस्कार है। समलैंगिक विवाह ना संवैधानिक है ना हिंदू लॉ के अंतर्गत है,ना ही ये इस्लामिक लॉ के अंतर्गत है, सर्वोच्च न्यायालय को इसको सुनने का भी कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि कानून बनाने का काम संविधान के अनुसार संसद का और राज्यों की विधान सभाओं का है। मैं यह समझता हूं सर्वोच्च न्यायालय को इस विषय को भारत की संसद पर छोड़ देना चाहिए। समलैंगिक लोग एक तरह की बीमारी से ग्रस्त है, इस तरह के बीमार ग्रस्त लोग को मान्यता देने के बजाय इन लोगों का ट्रीटमेंट होना चाहिए।

समलैंगिक विवाह का व्यापक विरोध

समलैंगिक विवाहों के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणी से लोगों में आम धारणा बनी कि शीर्ष न्यायालय समलैंगिक विवाह को विधि में मान्यता देने जा रहा है। यह देखते हुए देशभर में और सम्पूर्ण राजस्थान क्षेत्र में भी, समाज के सभी वर्गों की ओर से व्यापक विरोध किया जा रहा है। महिलाओं के विभिन्न संगठनों ने राजस्थान के लगभग सभी जिला व खण्ड केन्द्रों पर कलेक्टर, एसडीएम आदि अधिकारियों को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिए हैं। इन ज्ञापनों में कहा गया है कि समलैंगिक विवाह देश की संस्कृति के विरूद्ध है तथा इसे मान्यता देना भारतीय विवाह संस्था पर कुठाराघात होगा।

जयपुर, जोधपुर, अजमेर, बारां, सागवाड़ा, सवाईमाधोपुर, डूंगरपुर सहित लगभग सभी जिला व खंड केन्द्रों पर महिलाओं द्वारा ऐसे ज्ञापन देने के समाचार हैं। विहिप के कानूनी प्रकोष्ठ ने वाराणसी में अपने राष्ट्रीय अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें लिखा है-

'' विश्व हिंदू परिषद उस उत्सुकता से बहुत व्यथित है जिसके साथ सर्वोच्च न्यायालय समलैंगिक मामले की सुनवाई कर रहा है और इस मामले पर निर्णय लेने के लिए तैयार है।'' इस मुद्दे पर दिल्ली में देशभर के संतों का एक सम्मेलन भी हुआ जिसमें संतों ने मत व्यक्त किया कि समलैंगिक विवाह कभी भी भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं रहा है और न कभी होगा। दिल्ली विश्वविद्यालय में विधि प्रोफेसर सीमा सिंह का मानना है कि '' समलैंगिक विवाह एक सार्वजनिक मुद्दा बन गया है। जिस तरह से पूरे भारत में प्रतिक्रियाएं आ रही है, यदि समलैंगिक विवाह की स्वीकृति मिल गई तो इसके प्रतिकूल परिणाम होंगे।

नक्सली लड़ रहे हैं अपने अस्तित्व की लड़ाई

बस्तर में नक्सलियों की उपस्थिति को लेकर अब कहा जाने लगा है कि वे छत्तीसगढ़ में अपने अस्तित्व की अंतिम लड़ाई लड़ रहे हैं। पिछले आठ वर्षों में जिस तरह केन्द्र सरकार ने नक्सलियों के विरुद्ध लड़ाई का एक्शन प्लान बदला है, नक्सली समझ नहीं पा रहे कि फाइट बैक कैसे करना है। धीरे-धीरे उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसकती जा रही है, इसलिए वे बौखलाए हुए हैं।

छत्तीसगढ़ में लंबे समय से नक्सलियों से निपटने के उपायों ने उन्हें सीमित किया है और हताश भी। बीती 26 अप्रैल को उन्होंने पुलिस के विशेष बल डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) पर हमला किया। इस हमले में 10 जवान वीरगति को प्राप्त हुए।

डीआरजी छत्तीसगढ़ पुलिस का ही हिस्सा है, जिसे नक्सलियों से निपटने के लिए वर्ष 2008 में बनाया गया था। डीआरजी में स्थानीय युवाओं और पूर्व नक्सलियों की भर्ती की जाती है। वे नक्सलियों की पहचान से लेकर उनकी योजनाओं को विफल करने तक बड़ी भूमिका निभाते हैं।

नक्सलियों को आत्मसमर्पण के बाद डीआरजी में सीधी भर्ती नहीं दी जाती। पहले उनकी गतिविधियों पर लंबे समय तक नजर रखी जाती है। यदि उनका रवैया विश्वसनीय रहता है तो डीआरजी का हिस्सा बनने का प्रस्ताव दिया जाता है। प्रारंभ में उन्हें नक्सलियों से जुड़ी सूचना लाने के काम में लगाया जाता है।

हिरोली गांव के पास जंगल में नक्सली शहीदी सप्ताह मनाने पहुंचे थे। वे चाहते थे कि मुठभेड़ में मारे गए एक नक्सली का गांव में स्मारक बनाया जाए। इसके लिए उन्होंने ग्रामीणों पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। नक्सलियों के दबाव में आए बिना ग्रामीणों ने उनके गांव में होने की जानकारी पुलिस को दे दी। कुछ ही समय में डीआरजी जवान मौके पर पहुंच गए। उन्होंने नक्सली का स्मारक ध्वस्त कर दिया।

जब से बस्तर के अंदर नक्सलियों के सबसे बड़े गढ़ जगरगुंडा को उनसे छीन लिया गया है, तब से नक्सलियों का मनोबल कमजोर पड़ा है। किसी जमाने में यहां नक्सलियों की 'जनताना सरकार' हुआ करती थी। माओवादी अपने द्वारा बनाई गई समानान्तर कथित सरकार को जनताना सरकार कहते हैं।

लेकिन जब से अरनपुर-जगरगुंडा सड़क बनकर तैयार हुई है, तब से जगरगुंडा, बीजापुर, दंतेवाड़ा से उनकी जनताना सरकारें उखड़ गई हैं। नक्सलियों के लिए यह साफ संदेश है कि अब सरकार बदल गई है। अब भारत के जवान नक्सलियों को उनके गढ़ में जाकर उत्तर देने को तैयार हैं।

इस सड़क को तैयार करने में ढाई हजार जवानों ने दिन-रात पहरेदारी की। 18 किमी सड़क निर्माण में 110 बारूदी सुरंगें मिलीं जो बड़ी चुनौती थी। सड़क निर्माण के लिए जिन गाड़ियों में निर्माण सामग्री भरकर लाई जा रही थी, ऐसी 50 से अधिक गाड़ियों को नक्सलियों ने जला दिया था। इस सबके बावजूद भारतीय जवान पीछे नहीं हटे।

नक्सली हमले में शहीद 10 जवानों में से 8 पूर्व नक्सली थे। ये सरेंडर कर मुख्य धारा में लौट आए थे और डीआरजी में शामिल हो गए थे। एक जवान के परिवार ने कहा-**'गर्व है कि अब हम शहीद का परिवार कहलाएंगे। समर्पण नहीं किया होता तो कभी न कभी तो सुरक्षाबलों की गोली से मरते। कलंक के साथ मरने से लाख गुना अच्छा है, वर्दी पहनकर शहादत पाना।**

सरकार की पुनर्वास-कम-सरेंडर नीति की वजह से नक्सल कैडर हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। बस्तर रेंज के आईजी श्री सुंदरराज पी ने कहा कि 400 से ज्यादा नक्सली हर साल सरेंडर कर रहे हैं।

शहीद बेटे की मां ने कहा-

"मेरा बेटा देश के लिए बलिदान हुआ है, मैं आंसू नहीं बहाऊंगी, मुझे उसके बलिदान पर गर्व है"

पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर के पुंछ में एक सैन्य वाहन पर हुए कायराना आतंकी हमले में बलिदान हो गए पंजाब के तलवंडी-गुरुदासपुर के जवान हरकिशन सिंह का पार्थिव शरीर जब गांव में पहुँचा तो हजारों लोग नम आंखों से उन्हें श्रद्धांजलि देने को आतुर थे। चेहरे पर गर्व का भाव लिए वीर माता प्यार कौर ने कहा, " मेरा बेटा बचपन से ही देशभक्त था। वह अक्सर कहा करता था कि माँ, मेरी जिंदगी देश की अमानत है। मैं देश के लिए पैदा हुआ हूँ और देश के लिए बलिदान दूंगा। इसलिए आज मैं अपने बेटे के बलिदान होने पर आंसू नहीं बहाऊँगी। मुझे अपने लाडले के बलिदान पर गर्व है।"

भारत माता के चरणों में समर्पित

ओडिशा स्थित पुरी के बलिदानी लांस नायक देवाशीष बिस्वाल की शादी 2021 में ही हुई थी। जब उनका पार्थिव शरीर घर पहुँचा तो देवाशीष के पिता प्रताप बिस्वाल ने कहा, "जब वह छोटा था तो सेना में भर्ती होना चाहता था। कहता था कि मुझे भारत माता की सेवा करनी है। मेरे बेटे ने जिद और जुनून से अपनी मंजिल पा ली और आज भारत माता के चरणों में अपने को समर्पित कर दिया।"

वीर बलिदानी जवानों के दाह-संस्कार के समय सभी स्थानों पर उपस्थित हजारों की भीड़ "पाकिस्तान मुर्दाबाद" और भारत माता की जय के नारे लगा रही थी।

विश्व के प्रथम पत्रकार देवर्षि नारद जयंती पर पूरे प्रदेश में हुए कई कार्यक्रम, पत्रकारों का किया सम्मान

देवर्षि नारद को विश्व का प्रथम पत्रकार माना जाता है। वे अपने संवाद से सबको जोड़ने वाले तथा लोक कल्याण के लिए कार्य करने वाले थे। भारत के प्रथम हिंदी समाचार 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन नारद जयंती के दिन ही 1826 में शुरू किया गया था। नारद जयंती को 'पत्रकार-दिवस' के रुप में मनाया जाने लगा है।

विश्व संवाद केन्द्र की ओर से इस अवसर पर प्रदेश भर में संगोष्ठियां आयोजित की गई तथा प्रमुख पत्रकारों का सम्मान किया गया। जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, हनुमानगढ़, नागौर, अलवर, जयपुर, बीकानेर आदि स्थानों पर कार्यक्रम होने के समाचार है। इन सभी स्थानों पर पत्रकारों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

चित्तौड़ प्रांत की ओर से उदयपुर में ''स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण में मीडिया की भूमिका'' विषय पर परिचर्चा आयोजित हुई।

जोधपुर के जेएनवी विश्वविद्यालय परिसर में हुए कार्यक्रम को प्रो. राकेश सिन्हा तथा राजस्थान उच्च न्यायालय के मा. न्यायमूर्ति विजय विश्नोई ने संबोधित किया।

जयपुर प्रांत का कार्यक्रम अलवर में था। कार्यक्रम में हिंदुस्तान समाचार के संपादक जितेन्द्र तिवारी तथा दैनिक महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक डॉ.गोपाल शर्मा का पाथेय मिला। पाली के कार्यक्रम में संघ के श्री निम्बाराम ने मुख्यवक्ता के नाते सम्बोधित किया।

राष्ट्रीय सेवा संगम में प्रशिक्षण प्राप्त पत्रकारिता के विद्यार्थियों को दिए गए प्रमाण पत्र

जयपुर

बरसते बादलों के बीच स्वयंसेवकों का पराक्रम

जयपुर के वैशाली नगर स्थित चित्रकूट स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में बरसते बादलों के बीच संघ के स्वयंसेवकों ने 35 मिनट तक बिना रुके दंड, नियुद्ध, यष्टि, सूर्य नमस्कार आदि शारीरिक प्रस्तुतियां देकर उपस्थित जनसमुदाय का मन हर लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय सेना से सेवानिवृत्त मेजर किशन सिंह चौहान स्वयंसेवकों की कठिन साधना और परिश्रम को देखकर हतप्रभ थे। उन्होंने कहा कि स्वयंसेवकों का आत्मबल उनको निश्चित ही सफलता के शिखर पर लेकर जाएगा। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में जनसामान्य उपस्थित थे। इस अवसर पर क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम ने कहा कि स्वयंसेवकों ने विपरीत परिस्थितियों में भी कार्यक्रम को जैसा सोचा था वैसा प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह आनन्द का विषय है कि प्रस्तुति करने वाले स्वयंसेवकों में कर्मचारी, व्यवसायी और मजदूर सहित हर वर्ग और हर उम्र के लोग सहभागी हैं। संपूर्ण हिंदू समाज का संगठन करना ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्य है। उन्होंने यह भी कहा कि अपने जीवित रहते हुए ही हम पूरे विश्व में भारत को एक समृद्ध, समरस और समर्थ राष्ट्र के रूप में खड़ा होते देखेंगे। इस कार्य की पूर्ति के लिए संघ अनवरत लगा हुआ है और 2047 तक इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति के योगदान की आवश्यकता है।

उदयपुर

पानी की दीवार पर मेवाड़ी पराक्रम के दर्शन

प्रताप गौरव केन्द्र में वाटर लेजर शो की शुरुआत

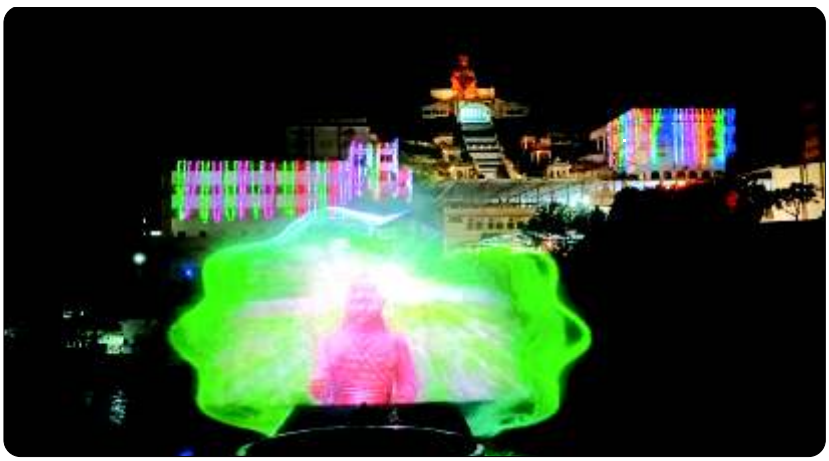

उदयपुर के प्रताप गौरव केन्द्र में महाराणा प्रताप सहित मेवाड़ी वीरों के पराक्रम को दर्शाने के लिए वाटर लेजर शो की शुरूआत की गई हैं। केन्द्र निदेशक श्री अनुराग सक्सेना ने बताया कि साढ़े सात करोड़ की इस परियोजना में उच्च श्रेणी का प्रोजेक्टर कनाडा से मंगवाया गया है। 2-डी एवं 3-डी म्युजिकल फव्वारे लेजर तकनीक के उपकरण जर्मनी से मंगवाए गए हैं।

गत 28 अप्रैल को असम के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने इस का उद्घाटन किया। 25 मिनट के इस वाटर लेजर शो के दौरान पानी की दीवार पर मेवाड़ी शौर्य गाथा के दर्शन कर दर्शक अभिभूत हो उठे। शौर्यपूर्ण दृश्यों पर भारत माता तथा महाराणा प्रताप के जयकारे लगाते रहे।

समारोह में कटारिया जी ने कहा कि प्रताप गौरव केन्द्र शौर्यपूर्ण इतिहास के दर्शन कराकर व्यक्ति के मन को झकझोरने और स्वाभिमान जाग्रत करने का केन्द्र है। श्री निम्बाराम ने इस अवसर पर प्रताप के चावण्ड काल के संबंध में शोध करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि प्रताप के शांतिकाल के दौरान प्रशासन, कला, व्यवस्था व नगर संयोजन आदि विषयों पर शोध होना चाहिए।

उदयपुर में 18 जून को जनजाति समाज भरेगा हुंकार

जिन्होंने धर्म छोड़ा वे एसटी का स्टेटस भी छोड़ें

जनजाति समाज के जिस व्यक्ति ने अपना धर्म बदल लिया है, उसे एसटी के नाते प्रदत्त सुविधाएं नहीं मिलनी चाहिए। धर्म बदलने वाले अपनी चतुराई से दोहरा लाभ उठा रहे हैं, जबकि मूल जनजाति समाज अपनी ही मूलभूत सुविधाओं के लिए जूझ रहा है। इसी मांग को लेकर उदयपुर में 18 जून को जनजाति सुरक्षा मंच, राजस्थान के बैनर तले हुंकार महारैली का आह्वान किया गया है।

मंच के राष्ट्रीय पदाधिकारी व राजस्थान के प्रभारी श्री भगवान सहाय ने कहा कि धर्मांतरण सिर्फ एक जाति-समाज की समस्या नहीं है, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की समस्या है और इसके समाधान के लिए सर्व समाज को एकजुट होना चाहिए।

भीम-मीम गठजोड़ (कथ्य और तथ्य) पुस्तक पर परिचर्चा

बाबा साहब थे भारतीय संस्कृति के पोषक

जयपुर स्थित पाथेय भवन में पिछले दिनों ज्ञानगंगा प्रकाशन द्वारा भीम-मीम गठजोड़ (कथ्य और तथ्य) नामक पुस्तक पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया।

अम्बेडकर पीठ के पूर्व महानिदेशक श्री कन्हैयालाल बेरवाल ने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के विचारों को याद करते हुए कहा कि स्वयं को अनुसूचित जाति समाज का हित चिंतक या बुद्ध का अनुयायी बताने वालों ने न तो बाबा साहब को ठीक से जाना और न ही उनके विचारों को। बाबा साहब अपने सरनेम के रूप में जो अंबेडकर शब्द लगाते थे, वह उनके ब्राह्मण शिक्षक के सम्मान में है। उनका पूरा नाम भीमराव रामजी अम्बेडकर है, जिसमें रामजी उनके पिता का नाम है। वे भारतीय संस्कृति के पोषक थे। बेरवाल ने कहा कि बाबा साहब ने भारतीय संस्कृति, संस्कृत व सनातन ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया था। उन्होंने नारद संहिता का आधार लेकर 'क्षुद्र कौन' में दास प्रथा के बारे में काफी कुछ लिखा है, जिसमें उन्होंने बताया कि दास सभी जातियों से होते थे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री निम्बाराम ने अपने उद्बोधन में राजस्थान के अलग-अलग स्थानों पर वर्षों से चली आ रही समग्र समाज के मूल स्वभाव की संस्कृति को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज भी जब मारवाड़ के किसी गांव में कोई बेटी ब्याही जाती है और बेटी के गाँव का कोई भी व्यक्ति जब उस गांव में जाता है तो उबके लिए कुछ ना कुछ लेकर जाता है। उन्होंने पुस्तक की सराहना करते हुए बताया कि व्यवहार में आई सामाजिक बुराइयों को हिन्दू समाज ने कभी सैद्धान्तिक मान्यता नहीं दी।

पुस्तक के बारे में बताते हुए सह लेखक कुमार वीरेंद्र ने कहा कि भारतीय ग्रंथों में कभी जाति की बातें नहीं कही गईं। उन्होंने संतों के समाज को बांधे रखने के प्रयासों को याद करते हुए कहा कि उनका उद्देश्य एक ही था- 'स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:'।

''भीम-मीम गठजोड़: कथ्य एवं तथ्य'' शोध आधारित अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है। वस्तुत: इस विषय पर खुले विचार प्रकट करने की महती आवश्यकता थी, जो यह पुस्तक पूर्ण करती है। प्रस्तुत पुस्तक पश्चिमी उपनिवेशियों और इस्लामी आक्रांताओं द्वारा फैलाए हुए भ्रम का निराकरण करने का प्रयास है।

■ **संजय दीक्षित**, *चेयरमैन जयपुर डायलॉग्स*

प्रस्तुत पुस्तक ''भीम-मीम गठजोड़: कथ्य एवं तथ्य'' एक अभिनंदनीय शोध प्रबंध है। यह नकली राजनैतिक प्रस्थापनाओं को प्रामाणिकता के साथ खारिज करने में सशक्त हस्ताक्षर है। आशा करता हूँ भारत विरोधियों के पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosytem) को ध्वस्त करने में यह पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी।

■ **अतुल तारे**, *समूह संपादक, दैनिक स्वदेश*

''यह पुस्तक ना केवल वर्तमान में चलाए जा रहे राजनीतिक षड्यंत्र का पर्दाफाश करती है, बल्कि हिन्दू समाज को पुनर्निर्माण एवं नवनिर्माण की ओर भी आमुख करती है। मेरा विश्वास है कि संगठित एवं समरस भारत के नवनिर्माण में इसकी सार्थक भूमिका होगी।

■ **संजय पासवान,** *पूर्व केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार*

गोगुन्दा (उदयपुर)

संघ के स्वयंसेवकों ने मेघवाल युवक की निकलवाई बिंदोरी

थाना क्षेत्र के ब्राह्मणों का कलवाना गांव (सायरा) में अब तक मेघवाल समाज के किसी भी दूल्हे की बिंदोरी घोड़ी पर बैठकर नहीं निकली थी। पहली बार पुखराज मेघवाल घोड़ी पर बिंदोरी निकालना चाहता था, उसे आशंका थी कि उसके पुत्र नंदाराम की बिंदोरी निकालने में लोग बाधा पहुंचाएंगे, इसी आशंका के चलते उसने पुलिस की मदद लेनी चाही। लेकिन जब इस बात की जानकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े कार्यकर्ताओं की मिली तो वे आगे होकर पुखराज के यहां विवाह कार्यक्रम में पहुंचे और साथ रहकर घोड़ी पर बिंदोरी निकलवाई। इस दौरान संघ के कई कार्यकर्ता तथा ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य चर्चा

मोबाइल बिगाड़ रहा है मानसिक संतुलन

साइकोलॉजिस्ट डॉ. अखिलेश जैन का कहना है कि मोबाइल की लत से युवाओं में चिड़चिड़ापन, रुटीन की आदतें प्रभावित होना, शारीरिक कमजोरी, अपनी पढ़ाई पर फोकस कम होना, पर्याप्त नींद न लेना, आंखों में आंसू आना, गर्दन-दर्द की शिकायत, टीचर व माता-पिता की बातों पर ध्यान न देना, बात-बात पर झगड़ा करना जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

गीता- दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं-

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।। (16/21)

काम, क्रोध तथा लोभ - ये तीन प्रकार के नरक के द्वार, आत्मा (व्यक्ति) का नाश करने वाले अर्थात् उसको अधोगति (नीचे की ओर) में ले जाने वाले हैं। अतएव व्यक्ति को इन तीनों को त्याग देना चाहिए।

पक्ष का कथन

'' भारत के पास किसी भी सुरक्षा चुनौति का उचित जवाब देने की क्षमता और इच्छा शक्ति है। आज वायु सेना में किसी भी तरह के संघर्ष में विरोधी को रोकने, आत्मरक्षा करने और यदि आवश्यक हो तो दंडित करने की क्षमता है।''

-**वीआर चौधरी**, भारत के वायु सेना प्रमुख

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत	हिन्दी
■ **अधुना त्वं कुत्र गच्छसि?**	अब तुम कहां जा रहे हो ?
■ **अहम् अधुना उद्यानम् एव गच्छामि।**	अब मैं बगीचे को ही जा रहा हूँ।

गौरव के क्षण

- भारतीय मूल के अमरीकी नागरिक अजय बंगा विश्व बैंक के अध्यक्ष चुने गए।
- एशियन बैडमिंटन चैंपियनशिप (पुरुष युगल) में सात्विक साईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने 58 साल बाद स्वर्ण पदक जीता।
- मिश्र के काहिरा में आयोजित आईएसएसएफ शॉटगन विश्व कप में भारत के मैराज अहमद खान और गनेमत सेखों ने स्वर्ण पदक जीता।

कुकिंग टिप्स

नर्म दही बड़े - दही बड़े बनाने के लिए पिसी हुई उड़द की दाल में थोड़ी सी सूजी डालकर अच्छी तरह से फेंटे। ऐसा करने से दही बड़े ज्यादा नर्म व स्वादिष्ट बनेंगे।

घरेलू नुस्खा

उल्टी होने पर - प्याज का रस, धनिया पत्ती अथवा अनार का रस थोड़ी-थोड़ी देर के अन्तर में पीने से उल्टी बंद हो जाती है।

किचन टिप्स

फ्रिज से बदबू आ रही हो तो लकड़ी का कोयला एक कटोरी में भरकर फ्रिज में रख दें, इससे बदबू जल्द दूर हो जाएगी।

ऑपरेशन कावेरी

'' सूडान देश में वहां की सेना तथा अर्ध सैनिक बलों के बीच राजधानी खारतम में जारी भीषण संघर्ष के दौरान वहां रहने वाले भारतीय फंस गए थे। उन्हें वहां से वापस अपने देश लाने के लिए चलाया गया था- ऑपरेशन कावेरी''। ऑपरेशन कावेरी के अन्तर्गत 3862 भारतीयों को हिंसा ग्रस्त क्षेत्र से सुरक्षित भारत लाया गया है।

जांचें की आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. महाराष्ट्र में क्रांतिकारी संगठन 'रामोशी' की स्थापना किसने की?
2. औरंगजेब से राजकुमार अजीत सिंह की रक्षा करने वाले वीर कौन थे ?
3. प्रतिवर्ष राजस्थान में वनवासियों का कुंभ किस तीर्थस्थल पर होता है?
4. 'सिर काट दे दियो क्षत्राणी' किस वीरांगना के बारे में कहा गया है?
5. क्रांतिकारी खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के किस जिले में हुआ था?
6. अलीपुर बम केस में क्रांतिकारी सत्येन्द्र बोस को फांसी कब हुई ?
7. 'राजस्थान केसरी' के नाम से विख्यात स्वतंत्रता सेनानी कौन थे?
8. क्रांतिकारी कन्हाईलाल दत्त को किस जेल में फांसी दी गई?
9. अंग्रेज गवर्नर स्टेनली की हत्या का प्रयास करने वाली बंगाली महिला क्रांतिकारी कौन थी?
10. 'ढाका अनुशीलन समिति' संगठन की स्थापना करने वाले क्रांतिकारी कौन थे?

उत्तर पृष्ठ 18 पर

तथ्य

17वीं लोकसभा ने ई-वाहनों के प्रयोग और पेपरलेस कार्यप्रणाली अपनाकर अपने चार वर्ष के कार्यकाल के दौरान 801.24 करोड़ रुपए की बचत की है।

बोधकथा

उल्लू और हंस

स्वामी विवेकानंद अमरीका के एक विश्वविद्यालय में 'भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म का रहस्य' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। बड़ी संख्या में छात्र, अध्यापक और विद्वान वहां उपस्थित थे। स्वामी जी ने कहा, ''भारतीय संस्कृति तथा धर्म के सभी तत्वों का वैज्ञानिक महत्व है।''

यह सुनकर एक अमरीकी बीच में उठकर बोला 'वास्तव में आपकी संस्कृति महान है, तभी तो आपके यहां देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू बताया गया है जिसे दिन में भी दिखाई नहीं देता। इसके पीछे क्या वैज्ञानिक तर्क है

स्वामीजी ने कहा, 'पश्चिमी देशों की तरह भारत में धन को ही सब कुछ नहीं माना गया है। हमारे ऋषि-मुनियों ने चेतावनी दी कि धन के असीमित मात्रा में पास आते ही मनुष्य की आंखें होते हुए भी वह उल्लू की तरह अंधा हो जाता है। इसी का संकेत देने के लिए लक्ष्मीजी का वाहन उल्लू बताया गया है।

स्वामीजी ने कहा, 'सरस्वती ज्ञान, विज्ञान और मानव का विवेक जागृत करने वाली देवी हैं इसलिए सरस्वती का वाहन हंस बताया गया है जो नीर-क्षीर विवेक का प्रतीक है। अब आप भली-भांति समझ गए होंगे कि संस्कृति और धर्म के सभी तत्वों के पीछे वैज्ञानिक तर्क छिपे हुए हैं।' देवी-देवताओं के वाहनों की यह अवधारणा सुनकर वह व्यक्ति स्वामीजी के प्रति नतमस्तक हो गया।

बाल प्रश्नोत्तरी - 36

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों, 1 व 16 अप्रैल का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। 10 से अधिक प्रतियोगियों के उत्तर सही पाए जाने पर निर्णय लॉटरी से होगा। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि -5 जून, 2023**

1. तृतीय राष्ट्रीय सेवा संगम (7-9 अप्रैल, 2023) का आयोजन कहाँ हुआ?
(क) जयपुर (ख) सीकर (ग) बीकानेर (घ) जोधपुर

2. सेवा संगम में देशभर के लगभग कितने संगठनों ने सहभागिता दर्ज की?
(क) 800 (ख) 700 (ग) 625 (घ) 950

3. कोरोना में सेवा के लिए 'राष्ट्रीय सेवा भारती' को कौन सा अवार्ड मिला था?
(क) हेल्थगिरी (ख) देवगिरी (ग) सेवागिरी (घ) राष्ट्रीय सेवा

4. समाज सेवा में कार्यरत राष्ट्रीय सेवा भारती की स्थापना कब हुई थी?
(क) वर्ष 2001 (ख) वर्ष 2000 (ग) वर्ष 2005 (घ) वर्ष 1999

5. कुष्ठ निवारक संघ की शुरुआत करने वाले सेवाभावी कार्यकर्ता कौन थे?
(क)गोविंदराव कात्रे (ख)गोविंद रानाडे (ग)गोविंद वल्लभ (घ) गोपालराव

6. संघ प्रार्थना 'नमस्ते सदा वत्सले' प्रथम बार गाने वाले प्रचारक कौन थे?
(क) यादवराव जी (ख) नानाजी देशमुख (ग) ब्रह्मदेवजी (घ) दादारावजी

7. पर्यावरण संरक्षण के लिए पद्मश्री प्राप्त लक्ष्मण सिंह जी किस ग्राम से हैं?
(क) लापोड़िया (ख) धांधोली (ग) तुन्देरा (घ) पड़ासोली

8. हेमू कालाणी जन्म शताब्दी वर्ष का समापन कार्यक्रम कहां आयोजित हुआ?
(क) भोपाल (ख) दिल्ली (ग) अजमेर (घ) आगरा

9. जैन मुनि बनने वाले दिलीप मेहता राजस्थान के किस जिले से हैं?
(क) पाली (ख) जोधपुर (ग) जालोर (घ) करौली

10. शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक दिवस किस तिथि को मनाया जाता है?
(क) ज्येष्ठ शु.13 (ख) ज्येष्ठ शु. 11 (ग) ज्येष्ठ शु.10 (घ) ज्येष्ठ शु. 8

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-36)

(अपनी पासपोर्ट फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम ..... कक्षा.....
पिता का नाम .....
उम्र ..... पूर्ण पता.....
.....
..... पिन.....
मोबाइल नं. .....

गणित पहेली

बताइए प्रश्नवाचक चिह्न के स्थान पर कौन सा नम्बर आएगा।

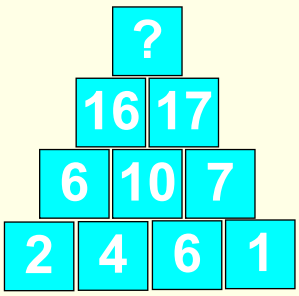

उत्तर : 33

बूझो तो जानें

प्रश्न : 1 रुपए में आपको 40 केले मिलते हैं। 3 रुपए में एक आम मिलता है। 5 रुपए में एक सेब मिलता है। आप कितने आम, सेब और केला खरीदेंगे कि 100 रुपए में 100 फल मिल जाएं ?

उत्तर : 19 सेब = 95 रुपए, 1 आम= 3 रुपए, 80 केले= 2 रुपए
कुल 19+1+80 = 100 रुपए 95+3+2=100

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 जून, 2023
(ज्येष्ठ शुक्ल 12 से आषाढ़ कृष्ण 12 तक)

जन्म दिवस

ज्येष्ठ शुक्ल 12 (1 जून) – श्री सुपार्श्वनाथ जयंती (7वें तीर्थंकर)
ज्येष्ठ पूर्णिमा (4 जून) – महात्मा कबीर जयंती
आषाढ़ कृ.1 (5 जून) – छठे गुरु हरगोविन्द जयंती (प्राचीन मत)
आषाढ़ कृ.10 (13 जून) – श्री नमिनाथ जयंती (21वें तीर्थंकर)
15 जून (1884) – क्रांतिकारी तारकनाथ दास जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

13 जून (1858) – राजा बलभद्र सिंह चहलारी की वीरगति
13 जून (1850) – बाबा साहब नरगुन्दर को फांसी
5 जून (1973) – द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी की पुण्यतिथि
9 जून (1900) – बिरसा मुण्डा का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/ अवसर

5 जून – विश्व पर्यावरण दिवस
14 जून – विश्व रक्दान दिवस
2 जून (1818) – पं. दीवान चन्द्र मिश्र की मुल्तान विजय
ज्येष्ठ शु.13 (2 जून) – हिंदू सम्राज्य पुनर्स्थापना दिवस
(छत्रपति शिवाजी महाराज राज्यारोहण दिवस)

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

31 मई – निर्जला एकादशी

पंचांग- ज्येष्ठ (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके1945
(20मई से 4 जून, 2023 तक)

रोहिणी व्रत (जैन)- 21 मई, **विनायक चतुर्थी** - 23 मई, **श्रुति पंचमी (जैन)** 24 मई, **नौ तपा प्रारम्भ** -25 मई, **श्री महेश नवमी**- 29 मई, **गंगा दशमी**- 30 मई, **निर्जला एकादशी व्रत**- 31 मई, **प्रदोष व्रत** -1 जून, **चांद पूर्णिमा व्रत**- 3 जून, **सत्यनारायण व्रत**- 4 जून

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 20-21 मई को उच्च की राशि **वृष** में, 22-24 मई **मिथुन** राशि में, 25-26 मई स्वराशि **कर्क** में, 27 से 29 मई **सिंह** राशि में, 30-31 मई **कन्या** राशि में, 1-2 जून को **तुला** राशि में तथा 3-4 जून को नीच की राशि **वृश्चिक** में गोचर करेंगे।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य, मंगल** व **बुध** क्रमशः यथावत वृष, कर्क व मेष राशि में स्थिति रहेंगे। **शुक्र** 30 मई को सायं 7: 39 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे।

नारायण दर्शन : सभी में एक परमात्मा का भाव

मालवीय नगर
जयपुर

अनूसूचित जाति की बेटी के हाथों पानी पीते संत

उत्तर जांचे कितने ज्ञानवान हैं? :
1. वासुदेव बलवंत फड़के 2. दुर्गादास राठौड़ 3. बेणेश्वरधाम 4. हाड़ी रानी 5. मिदनापुर 6. 21 नवम्बर, 1908 7. ठाकुर केसरी सिंह बारहठ 8. अलीपुर जेल 9. वीणा दास 10. पुलिन बिहारी दास

साभार : सोशल मीडिया

शत शत नमन

जन्मदिवस

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
तारकनाथ दास
15 जून

(1884-1958)

पुण्यतिथि

जनजातीय समाज के नायक
बिरसा मुण्डा
9 जून

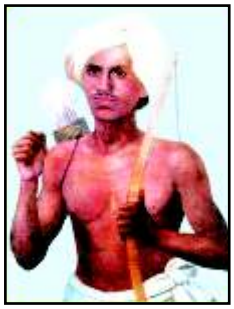

(1875-1900)

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

41

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

युद्ध प्रारंभ हुआ तो एशिया के कई देशों से नेताजी को जन-धन का अपार सहयोग मिला... लम्बे चलने वाले युद्ध की आर्थिक आवश्यकता पूर्ति के लिए नेताजी ने 5 अप्रैल, 1944 को रंगून में नेशनल बैंक ऑफ आजाद हिन्द स्थापित किया तो करोड़ों का युद्ध कोष एकत्र हो गया।

सर्वाधिक योगदान करने वाले हबीब साहब एवं श्रीमती बेताई को आजाद हिन्द सरकार ने 'सेवक-ए-हिंद' की उपाधि से विभूषित किया

आजाद हिन्द व जापानी सेनाओं को ब्रिटिश टैंक व तोपें नहीं रोक पायी... दोनों ने एक हजार आठ सौ वर्ग मील जमीन पर कब्जा कर लिया। जीते हुए क्षेत्रों में तिरंगा फहराया। अब हिन्द सेना इंफाल पर कब्जा करने ही वाली थी कि हवाई हमलों ने रोक दिया... दुर्भाग्य से वर्षा भी शुरु हो गई... हिन्द सेना को हटना पड़ा।

सेना को सुदृढ़ी करने के बीच ही 21 अक्टूबर,1944 को 'आजाद हिन्द सरकार' की वर्षगांठ मनाई गई... नेताजी की इच्छा के विपरीत उनका 48वां जन्मदिन रंगून के जुबली हॉल में मनाया... नेताजी को सोने से तोला गया... दो करोड़ की नकद राशि उपहार में एकत्र हुई... लोगों का उत्साह अद्भुत था

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
16-31 मई, 2023
(10 मई को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

पीएसबी - अपना घर

PSB UniC
You & I Connected
Mobile & Internet Banking Solution

8.73%* वार्षिक
ब्याज दर

₹785/-
मासिक किस्त
/ लाख

30 साल*
भुगतान
अवधी

* नियम एवं शर्तें लागू

https://punjabandsindbank.co.in
(ई-मेल : ho.customerexcellence@psb.co.in)

पीएसबी - अपना वाहन

8.75%* ब्याज दर

मासिक किस्त
/ लाख
₹1596/-

100%* ऑन रोड़ फाईनेंस

1800 419 8300 (टोल फ्री)

हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 मई, 2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,
_____
_____
_____